मूर्ति पूजा पर ३१ प्रश्न

लेखक

आचार्य डा० श्रीराम आर्य

(कासगंज)

प्रकाशक

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद, पिन०-२०१००१

(उ० प्र०)

टेलीफोन - ४७०१०६५

अष्ठम् संस्करण सन् २००१ ई०] मूल्य : एक रूपया

Scanned by CamScanner

मूर्त्ति पूजा पर ३१ प्रश्न

प्रश्न १ - मिट्टी, पत्थर, धातु आदि की मूर्तियों की पूजा करने से मूर्ति प्रसन्न होती है या ईश्वर खुश होता है ? पौराणिकों के मन्दिरों में रखी हुई मूर्तियां परमेश्वर की जब मूर्ति नहीं हैं सभी जन्म लेकर मरने वाले मनुष्यों के शरीरों की आकृतियों की नकल में बनाई गई है तो इनको परमेश्वर मानकर या परमेश्वर की मूर्तियां बताकर इनका पूजन बुद्धि विरुद्ध, मिथ्या कर्म क्यों न माना जावे ?

प्रश्न २ - इन मन्दिरों में स्थित मूर्तियों में देखने, सुनने, सूंघने, बोलने, समझने सोचने तथा स्पर्शानुभव करने की शक्ति है या नहीं ? यदि है तो प्रत्यक्ष में सिद्ध करो ? यदि नहीं है तो इन जड़ वस्तुओं के आगे हाथ जोड़ना, प्रार्थना करना, मनोतियाँ मांगना उन्हें वस्त्राभूषण पहिनाना उनके चरण स्पर्श करना व दबाना आदि कर्म निरर्थक एवं व्यर्थ क्यों नहीं ? क्या इन मूर्तियों को भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी लगती है ?

प्रश्न ३ - क्या मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रों से करने पर वे चैतन्य हो जाती हैं, और प्राण विसर्जन करने से मर जाती है ? यदि हां तो किसी मरी मक्खी में भी प्राण प्रतिष्ठा करके उसे जिन्दा करके दिखाओ ? यदि इतना भी नहीं कर सकते हो तो मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा का सारा क्रिया कर्म तुम्हारा ढोंग क्यों न माना जाये ?

प्रश्न ४ - सोना, जागना, हंसना, रोना, यह चैतन्य जीवों का धर्म है या जड़ मूर्तियों का ? क्या परमेश्वर जो कि निर्विकार है वह भी सोना, जागना, हंसना रोना आदि विकारों से युक्त होने से विकारी है ? जब नहीं है तो पुजारियों के इन वाक्यों का - भगवान को सुला दो, भगवान को भोग लगा दो, भगवान पर पंखा झल दो, का क्या अर्थ है ?

प्रश्न ५ - सूकर अवतार की मूर्ति को सूकर का स्वाभाविक भेजन विष्टा का भोग क्यों नहीं लगााया जाता है तथा खीर पूड़ी का भोग लगााकर उस

Scanned by CamScanner

Dharm Prakash Arya 21/33

बेचारे पशु का अपमान क्यों किया जाता है ? सूकर अवतार को ... लगे भोग के अवशेष को पुजारी क्यों नहीं खाता है ?

प्रश्न ६ - परमात्मा यदि साकार है तो सर्व व्यापक व अनन्त नहीं रह सकेगा, यदि निराकार है तो उसकी आकृति जो कल्पित की जायेगी वह मिथ्या होगी क्योंकि आकृति साकार एकदेशीय भौतिक पदार्थ की होती है सर्व व्यापक निराकार की नहीं होती है तब बतायें कि निराकार अनन्त सर्व व्यापक नित्य गुणवाले परमेश्वर की आकृति को मिथ्या कल्पना करके मिथ्या मूर्ति बनाकर उसकी प्रतिष्ठा पूजा आदि करना भी मिथ्या कर्म क्यों न होगा ?

प्रश्न ७ - जड़ पूजा से जो कि प्रकृति के कार्य रुप की उपासना है मनुष्य को घोर अन्धकार वा दुःख की प्राप्ति होने की बात जब वेद ने स्पष्ट कर दी है -

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।
ततोभूयइव ते तमो य उ सम्भूत्योंरतः ।। यजुर्वेद ४०-६ ।।

अर्थात कार्य का कारण रूप प्रकृति की उपासना से उपासक को घोर कष्टमय लोकों (स्थिति) की प्राप्ति होती है । तो ऐसा वेद विरुद्ध मूर्ति पूजा का कर्म करना पौराणिकों का अधर्म कार्य क्यों न माना जावे ? जिससे उसके लोक व परलोक दोनों बिगड़ते हैं ।

प्रश्न ८ - बतावें कि परमेश्वर क्लेशयुक्त है या क्लेश रहित है ? यदि क्लेशयुक्त है तो उसकी मुक्ति क्लेशों से कौन व कैसे करेगा ? यदि क्लेशमुक्त है भूख प्यास उसे नहीं लगती तो भोजनादि करा कर तुम उसे सुखी करने का पाखण्ड क्यों रचाते हो ?

प्रश्न ९ - यदि मूर्ति की पूजा में केवल भावना मात्र रहती है तो वेद प्रमाणों से सिद्ध करो कि वह भावना सत्य है तथा क्या भावना करने मात्र से किसी भी वस्तु में जो गुण उसमें न हो वह पैदा हो जाता है ?

प्रश्न १० - पुराण में जबकि मूर्ति पूजकों को **"गधा"** बताकर निन्दा

Scanned by CamScanner

को तो सभी सदा देखते हैं और मनुष्य ही नहीं पशु पक्षी भी सदा देखते हैं तब सभी एकाग्रचित और ध्यानावस्थित हो जाते।

२.– मूर्तिपूजा से दूसरी बड़ी हानि यह है कि मूर्तिपूजक को पाप कर्म करने की छूट मिल जाती है इस कारण वह बड़े-बड़े पाप कर्मो को भी कर सकता है। इस छूट के कारण दो हैं – एक यह कि वह यह समझने लगता है कि ईश्वर मन्दिर में ही है, अन्यत्र नहीं। ऐसा प्रत्यक्ष भी देखने में आता है कि मूर्तिपूजक मनुष्य मन्दिर के सम्मुख आकर सिर झुकाता है, अन्यत्र नहीं। वहीं प्रणाम करता है और जब किसी को सच्चाई की शपथ उठानी होती है उसको भी उस मन्दिर और उस मूर्ति के सम्मुख ले जाने का यत्न किया जाता है जिसकी वह पूजा करता है। इससे स्पष्ट है कि मूर्ति पूजकों का यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि भगवान केवल इस मन्दिर ही में नहीं बल्कि मन्दिर में भी उसके सारे परिसर में नहीं केवल मूर्ति ही में है। इसके सम्मुख झूठ नहीं बोलना है अन्यत्र सारा देश झूठ बोलने और पाप करने के लिए खुला है। दूसरा कारण मूर्तिपूजक को पाप की छूट मिलने का यह भी है कि वह विश्वास करता है कि मै चाहे कैसा ही बड़ा पाप कर लूँ वह सारा का सारा भगवान की मूर्ति का दर्शन करने, तथा उनका चरणामृत पीने, एवं उन पर जल वा कुछ पदार्थ चढ़ा देने मात्र से ही नष्ट हो जायेगा और उसका फल कभी भी नहीं मिलेगा। यथा–

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

३.– तीसरी बड़ी हानि मूर्तिपूजा से यह होती है कि मूर्तिपूजक की अपने अन्दर गुण उत्पन्न करने की प्रवृत्ति नहीं रहती; वह सर्वथा नष्ट हो जाती है। वह इस पर विश्वास करने लगता है कि–

व्याधस्याचरणं ध्रुवस्य च वयो विद्या-गजेन्द्रस्य का।।
का जाति विदुरस्य च यादवपतेरुग्रस्य किं पौरुषम्।।
का कुब्जा कमनीयरूपमधिकं किंञ्चत्सुदाम्नो धनम्।
भक्त्या तुष्यति केवलं न च गुणो भक्तिः प्रियो माधवः।।

अर्थात भगवान् भक्ति से प्रसन्न होते हैं, गुणों से नहीं। उन्होने व्याध कसाई का आचरण नहीं देखा, ध्रुव की आयु नहीं देखी, गज और ग्राह की लड़ाई में गज की रक्षा की उसकी क्या विद्या थी ? दासी पुत्र विदुर की जाति क्या थी ? यादवों के राजा कंस के पिता उग्रसेन का क्या पौरुष था ? कुब्जा कुबड़ी का क्या कमनीय रूप था ? सुदामा के धन

Scanned by CamScanner

नहीं था। भगवान गुण नहीं देखते भक्ति ही देखते है।

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यक् व्यवसितो हि सः।।

"जो मेरी अनन्य भाव से सेवा करता है, जो भक्त है, चाहे दुराचारी ही हो पर उसको साधु ही मानना चाहिये। इसी कारण सारे सन्यासी और महन्त और सारे पण्डे पुजारी चाहे उनमें कितने ही पापी और दुराचारी हो वह सब पूजनीय ही माने जाते हैं और उनको भंग–सुलफा आदि–आदि साधन भी दिये जाते हैं।

४.– मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध होने से पाप है। जैसे वेद विहित सत्य भाषणादि का करना धर्म है वैसे ही वेद–विरुद्ध कर्मो को करना अधर्म है। चारों वेदों में कही भी नहीं कहा गया है कि – **परमेश्वर की मूर्ति बनानी और पूजनी चाहिए** । कहीं भी नहीं कहा कि सोना चाँदी, पीतल, पत्थर, मिट्टी से मूर्ति बनानी चाहिये वह कितनी बड़ी कितनी मोटी लम्बी चौड़ी तथा मोटी हो वह दो भुजी चतुर्भुजी या अष्टभुजी कैसी बनाई जानी चाहिये और कैसे उसकी पूजा की जाए ? इसका वेद में कहीं भी कोई भी विधान नहीं है बल्कि वेद में स्पष्ट यह तो कहा है कि– **'न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्य नाम महद्यशः'-यजु० ३२।२** अर्थात उस परमेश्वर की कोई मूर्ति नहीं है, जो महान यश वाला है।

५.– अपार धन मूर्तिपूजा के कारण मन्दिरों में लगता है। कलकत्ते में एक करोड़ रुपया एक सेठ ने लगाकर एक मन्दिर बनाया। उसका उद्घाटन और मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा नामक मिथ्या प्रपंच रचने के लिए देश भर के बहुत से बड़े से बड़े पौराणिक पण्डित बुलाए गए थे। बद्रिकाश्रम के शंकराचार्य श्री कृष्ण बोधाश्रम जी तथा श्री करपात्री जी भी वहाँ आये थे–मैने पत्र लिखकर भेजा कि – **"मूर्तिपूजा वेदानुकूल है वा वेद विरुद्ध ?"** 'देश के बड़े बड़े पण्डित इस समय यहाँ आए हुए है, इससे अच्छा अवसर इतने विद्वानों के इकटठे होने का फिर मिलना कठिन है। इसीलिए इस अवसर पर मेरे साथ आप लोगों की ओर से कोई पंडित इस विषय में शास्त्रार्थ करले कि–**"मूर्तिपूजा वेदानुकुल है वा वेद विरुन्द ?"** मेरा भेजा हुआ पत्र पण्डितों ने भी पढ़ा। शंकाराचार्य जी तथा करपात्री जी ने भी पढ़ा और मेरे पत्र वाहक को कह दिया– "आप जाईये इसका उत्तर लिखकर भिजवा दिया जायेगा" सब चुप लगा गये, न शास्त्रार्थ किया और न पत्र का उत्तर दिया। इस मन्दिर पर एक करोड रुपया व्यय हुआ बताया जाता है। इस प्रकार अरबों खरबों रुपया मन्दिरों

Scanned by CamScanner

प्रश्न १८ - परमात्मा दर्शन की वस्तु नहीं है क्योंकि वह नेत्र इन्द्रिय का विषय नहीं है, परमात्मा बहरा नहीं है जो घण्टा घड़ियाल बजाकर उसे पुकारा जावे या ऊंचे स्वर में भजन व गाने गाये जाये परमात्मा का तो समस्त बाह्य जगत से इन्द्रियों की अन्तर्मुखी प्रवृति करके ध्यान किया जाता है और ध्यान करने वाले को नेत्र बन्द कर लेने पड़ते हैं ताकि चित्त एकाग्र हो सके। तो मूर्ति को निरुपयोगिता स्वतः नाम पर क्यों न माना जाये ?

प्रश्न १९ - मूर्ति पूजा को परमात्मा की उपासना में सीढ़ी बताना भी बुद्धि विरुद्ध बात है, क्योंकि सीढी सदैव वहीं व्यवहार में लायी जाती है जहां लक्ष्य व उसके उपयोगकर्ता में देश की दूरी होवे । एजेन्ट व दलाल वहां चाहिए जहां दो के बीच में देश व काल की दूरी होवे । उपासक व उपास्य परमात्मा के बीच में ये दोनों बातें न होने से मूर्ति पूजा की सीढ़ी वा मध्यस्थ की कोई आवश्यकता नहीं है । वैसा मानना घोर अज्ञानता क्यों नहीं ?

प्रश्न २० - मूर्तियों में न तो प्राण प्रतिष्ठा हो सकती है और न उनमें कोई शक्ति ही होती है । वे बादाम तोड़ने के काम तो आ सकती हैं किन्तु स्वतः हानि लाभ नहीं कर सकती है इतिहास से प्रकट है कि यवनों ने लाखों मन्दिर तोड़ डाले, मूर्तियां अंग-भंग कर दीं । आज भी चोर उन्हें चुरा ले जाते हैं पुजारी उन्हें सुरक्षा के लिए ताले में बन्द रखते हैं । तो ऐसी दशा में बेजान मूर्तियों को परमात्मा मानकर पूजना उसी में अपना जीवन बर्बाद करना तुम्हारी घोर अज्ञानता नहीं है तो और क्या है ? जो तुम देखते हुए भी मूर्ति की असलियत को नहीं समझते हो ?

प्रश्न २१ - जब मुसलमान व ईसाई लोग भी परमात्मा की सीधी उपासना कर सकते हैं और करते हैं तो तुमको ही ये पत्थरों की मूर्ति बनाकर पूजने की किसलिये आवश्यकता पड़ती है ? क्या तुम में उनके बराबर भी अक्ल नहीं है जो परमेश्वर की सीधी उपासना भी करना नहीं जानते हो ?

प्रश्न २२ - मूर्ति का लक्ष्ण ही यह है कि जिसके अवयव जड़ हों तो चेतन्य, ज्ञानवान शक्ति सम्पन्न अमृत पुत्र होकर भी जो लोग जड़ मूर्तियों

Scanned by CamScanner

को तथा पेड़ पत्थरों को पूजते हैं उन्हें भ्रान्त-घोर अज्ञानी क्यों न माना जावे ?

प्रश्न २३ - जब वेद " न तस्य प्रतिमाऽस्ति----- " कहकर घोषणा करता है कि परमेश्वर की कोई प्रतिमा नहीं बन सकती है क्योंकि वह अनन्त है, अनादि व निराकार सत्त है, तो उसकी मूर्ति अपनी कल्पना से बनाने वाले आप लोग नास्तिक क्यों नहीं हैं ?

प्रश्न २४ - नित्य सर्वव्यापक परमेश्वर का अवतरण नहीं हो सकता है अवतरण अथवा आरोहण एक देशीय सत्त का होता है तो जब कृष्णादि परमात्मा के अवतार ही सिद्ध नहीं किये जा सकते हैं । तो उनके शरीरों की आकृतियों की मूर्तियां बनाकर पूजने से परमात्मा का कोई सम्बन्ध भी सिद्ध नहीं किया जा सकता है। राम और कृष्णादि मनुष्य परमात्मा के भक्त थे न कि स्वयं परमात्मा थे ! जिनकी मूर्ति बनाकर तुम लोग पूजते हो ।

प्रश्न २५ - तुम मूर्ति पूजा करते हो अथवा उसमें व्यापक परमेश्वर की पूजा करते हो ? यदि मूर्ति की करते हो तो उसके हाथ पैर नाक आदि नष्ट हो जाने पर उसी मूर्ति की पूजा क्यों नहीं करते हो ? यदि व्यापक परमेश्वर की पूजा करते हो तो वह अंग - भंग मूर्ति में वा जिस पत्थर वा धातु से मूर्ति बनती है उनमें भी व्यापक होता है तथा विश्व के प्रत्येक पदार्थ में व्यापक रहता है तो उसकी पूजा क्यों नहीं करते हो ? एक खास शक्ल सूरत वाली धातु व पत्थर की पूजा क्यों करते हो ? एक खास शक्ल की पूजा करने से तुम केवल आकृतिपूजक हो न कि ईश्वरपूजक ?

प्रश्न २६ - जब किसी ने भी परमात्मा को आंखों से कभी देखा नहीं है और अगोचर होने से वह इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य नहीं है तो तुम कैसे साबित कर सकते हो कि तुम्हारी कल्पित मूर्तियां परमात्मा की शक्ल व सूरत की होती हैं ? विभिन्न प्रकार की तुम्हारी मूर्तियां ही यह सिद्ध करती हैं कि तुमको अपने कल्पित साकार परमात्मा की आकृति का कोई ज्ञान नहीं है ?

प्रश्न २७ - जब परमात्मा मूर्ति से भी व्यापक है और फूलों में भी व्यापक है तो तुम फूलों को मूर्ति के परमात्मा पर क्यों चढ़ाते हो ?

Scanned by CamScanner

प्रश्न २८ - जिस परमेश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा, विद्युत जैसा प्रकाशमान लोकों व तत्वों का निर्माण किया है जो विश्व को खिलाता है उसको दीपक से आरती उतार करके व भोग लगाकर उसका अपमान क्यों करते हो ?

प्रश्न २९ - निराकार एकदेशीय प्रत्येक जीव के शरीर में विद्यमान जीवात्मा की भी मूर्ति तुम नहीं बना सकते हो तो विश्वव्यापी अनन्त परमेश्वर की मूर्ति बनाने की पाखण्ड रचना तुम्हारी घोर अज्ञानता व पाखण्ड नहीं है तो और क्या है ?

प्रश्न ३० - वाराह अवतार के मन्दिरों में तुम मेहतर को पुजारी क्यों नहीं बनाते हो जो कि सूकर अवतार वंशजों को पालते हैं तथा नित्य प्रातः सांय गरमागरम ताजी भोजन डलिया में लाकर सूकर अवतार को खिलाकर उसे प्रसन्न रख सकते हैं । क्या यह पौराणिक पुजारियों द्वारा मेहतरों के अधिकार पर डाकेजनी नहीं है ?

प्रश्न ३१ - यदि यह कहा जाये कि मूर्ति पूजा चित्त को एकाग्र करने की साधना है तो भी मिथ्या है क्योंकि मूर्ति की आरती उतारना, घंटा घड़ियाल बजाना, उसके सामने हाथ जोड़ना, प्रार्थना करना, शाष्टांग दन्डवत करना आदि क्रियायें चित्त की एकाग्रता में बाधक होती हैं न कि एकाग्रता की बात सिद्ध करती हैं ? बतावें कि मूर्ति पूजा चित्त की एकाग्रता में साधक कैसे है ?

---------- : o : ----------

नोट - आचार्य श्री डा० श्रीराम आर्य (कासगंज निवासी) जी का समस्त साहित्य अब "अमर स्वामी प्रकाशन विभाग", १०५८ विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद से प्रकाशित किया जा रहा है, पाठकवृन्द कृपया सम्पर्क करे।
(फोन नं० - ०१२०-४७०१०६५)

कम्प्यूर्टस : तायल कम्प्यूटर्स- अम्बेडकर रोड, गाजियाबाद ✆४७५२५१५
मुद्रक : तायल आफसैट प्रिंटिंग प्रैस, अम्बेडकर रोड, गाजियाबाद

Scanned by CamScanner